डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

सा. अका./100

दिनांक 11 अप्रैल 2022

प्रेस विज्ञप्ति

सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम में पधारे कुर्दिस्तान के हावल अबू बेकर

भारत और इराक के सम्बंध प्राचीन काल से मधुर रहे हैं – अबू बेकर

11 अप्रैल 2022, नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी में अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद के सहयोग से सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के तहत इराक़ के सलेमानी गवर्नर श्री अबू बेकर पधारे। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव तथा पूर्व सचिव इंद्रनाथ चौधुरी ने अकादेमी की परंपरा के अनुसार श्री अबू बेकर का स्वागत और अभिनंदन अंगवस्त्रम और अकादेमी के प्रकाशन भेंट करके किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि इराकी साहित्य की जड़ें सुमेरियन काल तक जाती हैं। इराकी साहित्य और ज्ञान का दायरा बहुत विस्तृत रहा है। उन्होंने कहा कि नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, ज्योतिष और खगोलविद्या सहित अनेक ज्ञानानुशासनों में इराकी विद्वानों ने विलक्षण महारत प्राप्त की थी, जिसने विश्व के अनेक देशों को प्रभावित किया। उन्होंने बताया कि साहित्य अकादेमी द्वारा प्राचीन सुमेरी वीर–महाकाव्य 'गिलगमेश' को हिंदी में अनुवाद करवाकर प्रकाशित किया गया है। उन्होंने कहा कि इराक की कुर्दिश भाषा की गौरवशाली महान परंपरा वहाँ नए साहित्य तक चली आई है।

अपने वक्तव्य के प्रारंभ में श्री अबू बेकर ने सभा में भारत के विभिन्न भाषाओं के उपस्थित लेखकों और विद्वानों का अभिनंदन करते हुए अकादेमी और आईसीसीआर का धन्यवाद दिया। उन्होंने बताया कि वे कुर्दिस्तान, इराक से आते हैं और वहाँ की स्वीकृत भाषा कुर्दिश है, जिसकी बड़ी साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि पूरे विश्व में साहित्य ने सभ्यता और मानवता के विकास में प्राचीनकाल से ही गौरवशाली प्रतिमान निर्मित किए हैं। उन्होंने महात्मा गाँधी जैसे महापुरुषों का भी स्मरण किया, जिन्होंने पूरी दुनिया की मानवता के लिए कार्य किया है। उन्होंने पूरी दुनिया पर आए तमाम संकटों, यथा कोरोना काल, पर्यावरणीय असंतुलन तथा आतंकवाद आदि समस्याओं का हवाला देते हुए कहा कि इससे पूरा

विश्व गहरे तक प्रभावित हुआ है। प्रकृति के प्रति सही व्यवहार और सौंदर्यशास्त्रीय चिंतन तथा साहित्य द्वारा हम स्वस्थ मानवता का पोषण कर सकते हैं और समस्याओं से निजात पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि संस्कृति की आत्मा पवित्र और शुद्ध होती है, उसमें कुछ भी मिश्रित नहीं किया जा सकता। उन्होंने विश्व समुदाय से मनुष्य मात्र की सामाजिक सुरक्षा तथा वैश्विक संस्कृति के विकास के लिए कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक आंदान प्रदान से हमारे बीच परिचय का विस्तार होता है और एक दूसरे के प्रति सम्मान बढ़ता है। उन्होंने भारत और इराक के बीच प्राचीन मधुर सम्बंधों का उल्लेख किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में भारत की सांस्कृतिक संस्थाओं, साहित्य अकादेमी और कुर्दिस्तान के आपसी सहयोग से साहित्य, कला और संस्कृति सहित अनेक क्षेत्रों में बेहतर परिणाम सामने आ सकते हैं जो मानवता की सेवा में कारगर साबित हो सकते हैं।

कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रख्यात समाजसेवी विंध्येश्वर पाठक ने भी अंगवस्त्रम, पुस्तकें और पुष्पगुच्छ देकर आमंत्रित अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम में इंद्रनाथ चौधुरी, सुरेश ऋतुपर्ण, चंद्रमोहन, गौरीशंकर रैणा, रूप कृशन भट्ट, दिविक रमेश, ज्योतिष जोशी, यशोधारा मिश्र, रणजीत साहा आदि अनेक विद्वान लेखक उपस्थित थे, जिन्होंने आमंत्रित अतिथि के वक्तव्य के बाद अपने मत भी व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी में उपसचिव कृष्णा किंबहुने ने किया।

(के. श्रीनिवासराव)